श्री स्वामी जानकी शरण जी मधुकर

महाराज कृत

अष्टयाम

प्रकाशक :—

स्वर्गीय श्री धन्बहादुर वर्मा-

सुपुत्री—

श्रीमती जानकी सहचरी

(जयन्ती देवी) जी

रूमजा टार मोरिया गांव नं० ३

पूर्व उखल ढुंगा, नैपाल ।

भूमिका

श्री रामानन्द सम्प्रदाय पूर्वाचार्यों का हृदय सम्मत उपासना का मूल यह अष्टयाम है। इस अष्टयाम में केवल शृँगार भाव का ही वर्णन होते हुये भी आचार्यों ने ईश्वर की ऐश्वर्यता को दृष्टि कोण कर के सभी रसों की लीलाओं का विविध माधुर्य रसास्वादन किया है।

जैसे कि—

राम हैं मातु पिता सुत बन्धु औ संगि सखा गुरु स्वामि सनेही।

तथा—

जननी जनक बन्धु सुत दारा। तन धन भवन सुहृद परिवारा॥
सब कर ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बांधि बर डोरी॥

ममता का ताग—

यह जग में जहँ लगि या तन की प्रीति प्रतीति सगाई।
सो सब तुलसिदास प्रभु ही सों होहिं सिमिटि इकठाई॥
नातो मोहि तोहि अनेक मानिये जो भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै॥ आदि

यह अष्ट पहर सेवा का प्रसंग श्री करुणा सिन्धु जी महाराज का बताया हुआ जैसा का तैसा महाराज श्री स्वामी लक्ष्मण शरण जी को तथा आपके सुशिष्य श्री स्वामी कौशल्या शरण जी महाराज को तथा आपके सुशिष्य श्री १००८ श्री स्वामी

किशोरी शरण (भोली भगत) जी महाराज को तथा आपके सुशिष्य श्री १०८ श्री स्वामी श्री सिया शरण जी महाराज (मधुकरिया महाराज) को प्राप्त हुआ है आपकी कृपा से यह अष्टयाम मुझे प्राप्त हुआ है ।

मैंने अपने शिष्यों के अतिशय आग्रह पर इस अष्टयाम को लीपी वध्य करवाया है । जिसको यह श्रीमती जानकी सहचरी (जयन्ती देवी) जीं ने तथा श्रीमती जानकी पादशीला (दिलो कुमारी) जीं ने अपनी उत्तम श्रद्धा को लोक कल्याण में प्रवाहित करके मुझ से जबदरदस्ती आज्ञा मांग के मेरे श्री गुरु महाराज जी की जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष में प्रकाशित किया है ।

श्री जानकी शरण मधुकरिया

श्रीमती चारुशीला बाग,
श्री जानकी घाट, श्री अयोध्या जी ।

क्वांर अमावास्या,
संवत् २०१५

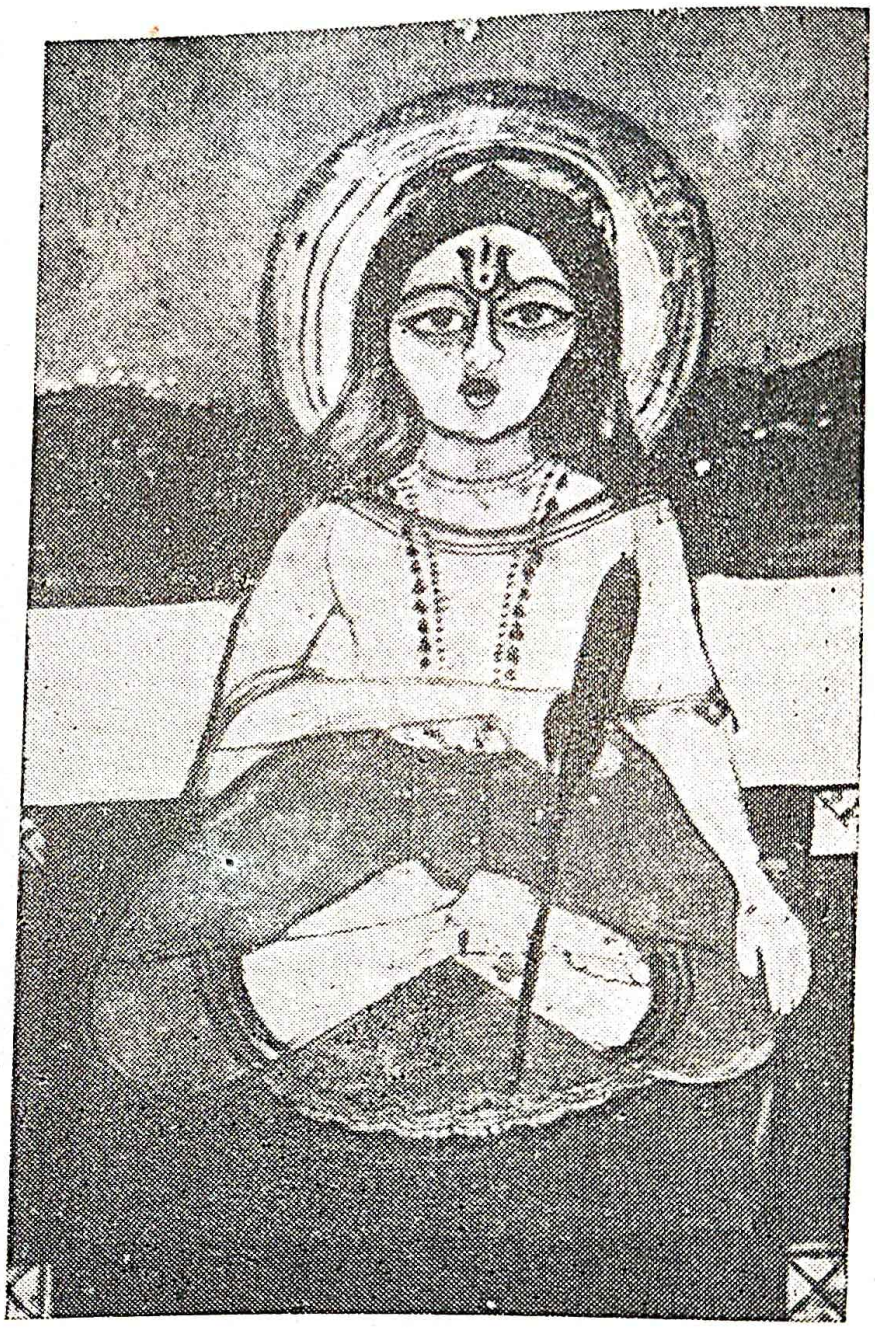

श्री रामानन्द सम्प्रदाय विभूति स्वरूप शृँगाररस प्रचारक—
आचार्य—अनन्त श्री स्वामी श्री रामचरण दास जी
(करुणा सिन्धु) महाराज

अष्टयाम का सेवा समय

३ बजे से ३॥ तक—अपने स्वरूप का उत्थापन शृंगार आदि।

३॥—४—आचार्य पूजा सर्वेश्वरी जी की पूजा।

४—४॥—रंगमहल आये उत्थापन गीत गाये।

४॥—५—उत्थापन, आरती, दूधपीना, बाहर आये, आरती भई।

५—५॥—बाग बिहार।

५॥—६— हिंडोल कुन्ज बिहार।

६—६॥—दातुन, मंगल शृंगार, भोग, आरती,।

६॥—७—तेल उबटन, स्नान।

७—७॥—यज्ञ, दान, पति पूजन, आरती।

७॥—८—कलेऊ।

८—८॥—शृँगार।

८॥—९—सभा कुन्ज की आरती।

९—११—चौपड़ादि खेल।

११—१२—भोजन, शयन आरती।

१२—३—शयन।

३—३॥—उत्थापन, आरती, तेल उबटन, स्नान।

३॥—४—वसन्त अनुरूप वन मेंभोग, आरती. बागबिहार।

४—६॥—शृँगारवन का फूल शृँगार, आरती, बनबिहार।

६॥—७—सर्यू तट बिहार।

७—७॥—प्रमोदवन जाना फूल शृँगार उतार के रास शृँगार करना।

७॥—८—कलेऊ, रास, आरती, ।

८—१०—रास, मान; व्याह, होली, झूला ।

१०—१०॥—व्यारू (रात का भोजन)

१०॥—११ —शयनकुन्ज आना,शयनशृँगार, शयनआरती, शयन ।

११—११॥—संगीत, चरणसेवा ।

११॥—१२—सपरिकर सब का शयन ।

१२—३—नीद्राबिलास ।

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

श्री सीताराम रसिक सन्तों की प्रधान आचार्य गद्दी

श्री चारुशीला बाग

श्री जानकी घाट, श्री अयोध्या जी ।

❀ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ❀

श्री मत्यै सर्वेश्वर्यै श्री चारुशीलायै नमः ।

श्री सद्गुरवे नमः ।

* श्री अष्टयाम चरित्र *

श्री सीताराम नाम उच्चारण करते हुये श्री गुरु चरण उपकार इस प्रकार स्मरण करै - प्रकाश मय कोटि सूर्य ज्योति मन्डल के मध्य एक लाल कमल अन्नत दलों के बीच प्रधान चार दलों पर चार वैकुन्ठ यथा-पूर्व दल में महा बैकुन्ठ, दक्षिण दल में रमा वैकुन्ठ पश्चिम दल में गो लोक उत्तर में वासुदेव लोक है। मध्य कर्णिका में अनन्त वैकुन्ठों का आदि कारण परात्पर वैश्वणव धाम श्रीसाकेत है।

श्री साकेत का वर्णन।

श्री साकेत का वर्णन इस प्रकार है :— साकेत से पूर्व नीलाचल दक्षिण रत्नाचल, पश्चिम हेमकूट, उत्तर मुक्ता चल, इन चार पर्वतों के अनन्त शिखर दिव्य शोभा से बिभूषित विशाल वन नित्य किशोर किशोरी वृक्ष लता मृग मृगी पक्षी भ्रमर आदि वन सम्पत्तियों से सत चित आनन्द मय दिव्य भूमी आभीर जातीय आदि नर नारी तथा दिव्य गऊ महिषी आदि जंगल विस्तार है। इन चार पर्वतों तथा वन के भीतर मन्डलाकार चारों तरफ़ श्री सरयू जी की धारा सगुण ब्रह्म

ज्योति मन्डल की तरह आवृत है दोनों किनारा मणि मय घाटों से सुशोभित हैं।

इस सरयू धार के मन्डल के भीतर १२ बन इस प्रकार हैं—

पूर्व में शृँगार बन, बिचित्र बन, अशोक बन । दक्षिण में रसाल बन, चम्पक बन, चन्दन बन, । पश्चिम में तमालबन, बिहार बन नागकेशर बन । उत्तर में पारिजात बन, कदम्ब बन अनंग बन ये १२ बन हैं।

इन बनों का स्वरूप इस प्रकार है—

प्रत्येक बन १२ कोश करीब लम्बा, ६ कोश करीब चौड़ा नौखन्डा मणि मय महलों से चारों तरफ घिरा चार दिशा-दिव्य फाटकों से सजा हुआ है भीतर में दिव्य बन विस्तार के बीच में सात आवरन नौखन्डा महलों व उपवनों व मध्य बागों व बीच कल्प वृक्ष के नीचे रास मन्डपों से प्रत्येक बन शोभित है।

इस १२ बन मन्डल के भीतर श्रीं सरयू जी की खाँई श्री अयोध्या नगर के रक्षा के वास्ते बनी हुई है जिस के दोनों तरफ मणिमय घाट तथा गोचर भूमि भी सुशोभित है।

इस खाई मंडल के भीतर नगर कोट चारों दिशा फाटकों से अति सुशोभित है मध्य में सात आबरण शहर अपने विस्तरों से यथा योग्य सुशोभित हैं। सप्तावरण नगर के मध्म में श्री

चक्रवर्ति इन्द्र महाराज दशरथ जी का राजकोट चारों दिशा फाटकों से तथा कोट के बाहर सेना निवेश अष्ट भ्राता अष्ट मंत्रियों के महलों से विभूषित है। राजकिला के दक्षिण फाटक के भीतर पूर्व भाग में शत्रुघ्न कुमार जी का सप्तावरण महल है। पश्चिम भाग में श्री भरत कुमार जी का सप्तावरण महल है। राज कोट के पश्चिम फाटक के भीतर श्री चक्रवर्ति इन्द्र महाराज दशरथ जी का सात सौ रानियों का रनिवास सात सौ महलों से गोल मन्डलाकार बना हुआ है। मध्य बाग के बीच कल्प बृक्ष के नीचे महारानी श्री मती कौसल्या अम्बा जी की कचहरी है। जिस में महाराज भी चक्रवर्तीजी जब रनिवास में आते हैं तो तब इसी कचहरी में मध्य मण्डप में रत्नों का सिंहासन पर महाराज बिराजे बाम भाग में श्री कौशल्या अम्बा जी और दक्षिण भाग में श्री केकेई अम्बा जी चारों तरफ सब रानियाँ अपनी २ फौज लिये सुशोभित होती हैं।

श्री राजकोट के उत्तर फाटक से भीतर श्री लक्ष्मण कुमार जी का सप्तावरण महल है। श्री राजकोट से पूर्व फाटक से भीतर वसिष्ठ वामदेव, जाबालि, कश्यप, गौतम, मार्कण्डेय, मौदगल्य, कात्यायन, इन ८ उपरोहितों के आठ महल अलग २ हैं। श्री राजकोट के मध्य भाग में दक्षिण बगल श्री चक्रवर्ति इन्द्र महाराज दशरथ जी की राज कचहरी रत्न सिंहासन सप्तावरण महलों से युक्त है उत्तर भाग में श्री सीताराम जी का निवास स्थान श्री कनक भवन है।

चौदह आवर्णों से युक्त है इस प्रकार इस राजकोट के अन्दर का साधारणवर्णन हुआ इसी प्रकार इस राजकोट के चारों दिशा फाटक से चली हुई सडक सप्तावरण शहर को काटती हुई तथा खाँई में चारों दिशा पुल दो २ वनों के बीच होकर बाहर चारों दिशा सरयू जी के पुल पर से चारों दिशा पर्वतों तक यह राज मार्ग अद्भुत सजावट तथा इन्तजाम के साथ गया हुआ है। इस प्रकार श्री साकेत का साधारण वर्णन हुआ ॥ जै श्री सीताराम ॥

श्री कनक भवन का वर्णन ।

श्री कनक भवन का वर्णन इस प्रकार है कि राजकोट के मध्य उतर भाग में श्री कनक भवन के चारों तरफ वाहर में बगींचा है चारों दिशा चार फाटक पूर्व में सिंघद्वार दक्षिण में शार्दूलद्वार पश्चिम में गजारि द्वार उत्तर में मृगभानुद्वार है।

चार द्वार से युत चौदह आवरण इस प्ररकार है:— सबसे वाहर का चौदहवाँ मयूरावरण तेरहवां हंसावरण बारहवां सारसावरण। ग्यारहवां कपोतावरण दसवां कीरावरण नौवां पटलावरण आठवां हरितावरण सातवां पीतावरण छठवां अरुणावरण पाचवां नीलावरण चौथा श्वर्णावरण तीसरा श्यामा वरण दूसरा कंचनावरण। पहला चन्द्रावरण है। मयूरावरण में पूर्व दिशा दान साला दक्षिन दिशा पोष्ट खजाना। पश्चिम में जानाना बजार उत्तर में वाहन पशु शाला तेरह, बारह ग्यारह

इन तीन आवरण में देव गन्धर्व किन्नरादि कन्या निवास। दस, नौ दो में राज कन्या। आठ में रास का आवरण। सात में नहर जहाँ पर से कनक भवन के समस्त महलों में यन्त्र द्वारा जल जाता है। छठे में निमिवंशी कन्या ६४ युथेश्वरी पांच में ३२ युथेस्वरी चौथे में १६ युथेश्वरी तीसरे में ८ युथेश्वरी तथा श्रीस्वस्तिक भवन में श्रीमती सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जी श्री आचार्य स्वरूप तथा अपना स्वरूप भी रहते हैं। दुसरे आवरण में ऋतु अनुरूप ऋतु अनुकूल १२ वन हैं प्रथम आवरण में श्री युगल सरकार के अष्ट सेवा कुन्ज हैं यथा— १ हिंडोला कुन्ज, २ वल्लभ कुन्ज, ३ स्नान कुन्ज, ४ कलेऊ कुन्ज, ५ शृँगार कुन्ज, ६ सभा कुन्ज, ७ भोजन कुन्ज, ८ मध्यान शयन कुन्ज, इन अष्ट कुन्जों के मध्य में विशाल बगीचा है।

जिसके चारों तरफ का चार नाम यथा— पूर्व में चित्र वन। दक्षिण में विचित्र वन। पश्चिम में अद्भुत वन। उत्तर में आश्चर्य वन। इस बगीचा के बीच में रंग महल इस प्रकार है— ३ आवरण खम्भावली ओसारा पीत लाल स्वेत रंग के हैं। चारों कोनों पर चार बुर्जा खम्भों के ही हैं। इस प्रकार इस ओसारे के छत का आधार एक पीत आवरण नौ खन्डा महल है। दूसरा लाल आवरण नौ खन्डा महल तथा तीसरा सफेद आवरण नौ खन्डा महल है इनके वीच का गोल आंगन में लक्ष दल मणि मय कमल के ऊपर श्री सीताराम जी का रात्रि शयन कुन्ज

है। कमल के दल २ प्रति एक लाख खम्भों की पंक्ति आवरण प्रति है इसी प्रकार दूसरा आवरण दल २ प्रति खम्मों के पंक्ति का लाल आवरण है इसी प्रकार तीसरा आवरण सफेद खम्भों का है मध्य कार्णिका में श्री युगल सरकार का शयन पलँग है जिसका वर्णन अमित शारदा शेष आदि भी पूरा नहीं कर सकते। इस प्रकार १४ आवर्णों के सहित मध्य रंग महल वर्णन किया।

अष्टयाम।

अब श्री युगल सरकार के नित्य सेवा अष्टयाम का वर्णन करते हैं— श्री कनक भवन के दक्षिण तरफ रत्न सिंघासन में नित्य प्रति रात के तीन बजे तथा दिन के तीन बजे राज दुंदुभी विबध प्रकार के बाजाओं से मिश्रण युत मनोहर शब्द बजाता है इस प्रकार अयोध्या शहर के प्रत्येक चौकों में राज दुंदुभी बजती है इसी प्रकार श्री कनक भवन में भी ४ द्वार १४ आवर्णों के प्रत्येक चौकों में अर्थात् ५६ चौकों में राज दुंदुभी बजती है। जिसके मनोहर शब्द सुनकर समस्त परिचारिकायें अर्थात् सेवकियां अपना २ स्नान शृँगार पूर्वक सौज सज के अपने २ स्वामिनियों के यहाँ सेवा में लग जाती हैं।

भजन करने वाला भावुक ब्राह्म मुहूर्त में उठ कर सीताराम सीताराम कहते हुए गुरु महाराज को प्रणाम करे। गुरु उपकार स्मरण करते हुये यथा शक्ति अपने हृदय कमल

के अन्दर चित्त को शान्त पूर्वक स्थापन करके श्री कनक भवन जी का इस प्रकार स्मरण करे :—

स्वस्तिक भवन ।

कनक भवन पूर्व द्वार तीसरे चौक दक्षिण फाटक के भीतर स्वस्तिक भवन इस प्रकार है-चारों तरफ एक आवरण नौ खन्डा महल चारों दिशा फाटक मध्य बाग में ३ महल अलग अलग हैं। उत्तर तरफ का महल श्री सर्वेश्वरीजू का तथा मध्य में आचार्य महल दक्षिण भाग में निज स्वरूप का महल है।

अब अपने सरूप के महल का वर्णन इस प्रकार है—एक आवरण चारों तरफ नौ खन्डा महल चारों दिशा फाटक भीतर आंगन के बीच ३ आवरण खम्भावली १ आवरण अस्ट कुन्ज और चारों दिशा दरवाजें हैं। इस प्रकार अष्ट कुन्ज के भीतर फिर भी दूसरा आंगन जिस में एक बंगला ३ आवरण खम्भावली ओसारा भीतर हाल चारों तरफ दरवाजा है। हाल में पलंग पर दिव्य बिछौना से सजावट युक्त पर अपना स्वरूप १२ वर्ष की अवस्था गौर वर्ण द्वौं भुज नित्य श्री निमि वंशी महाराज शत्रुजित जी की कन्या श्री किशोरी जी की परम प्रिया चचेरी बहिन सोई है।

इस प्रकार अपनी आत्मा का नित्य सच्चिदानन्द सरूप तुरीय अवस्था में श्री युगल सरकार की सेवा रूप में स्वरूप

विचार करै और अपने प्रारब्ध मय इस पंच भौतिक शरीर को स्थूल, सूक्ष्म, कारण तथा माया का दरवाजा मान करके पहरे हुये वस्त्र की तरह भूले रहना चाहिये। भगवत् नाम या मन्त्र उच्चारण पूर्वक नित्य सरूप का अनुसन्धान करते हुये उस पलँग पर सोई हुई अवस्था में अपने सरूप के नजदीक अपने सरूप की आठ सखियां जिनका नाम (१) मन शीला (२) बुधशीला (३) चित शीला (४) सोहाग शीला (५) सुख शीला (६) शान्त शीला (७) गुन शीला (८) शील शीला। ये ८ निज सरूप की सहचरी अपने सरीर को पँलग पर से उठा कर वस्त्र भूषण सजा के पँलग पर से उत्तर दरवाजे बाहर आकर उत्तर तरफ के कुन्ज में चरण प्रछालन जिभि कुल्लादि सदाचार कृत्य कर के पूर्व भाग में दूसरे कुन्ज में दिव्य चौकी के ऊपर गद्दाओं में लेटी हुई उपटन तेल फूलेल आदि मर्दन होकर फिर दुसरे कुन्ज में ८ कोंण के नील मणी के चौकी के ऊपर बैठे हुये अपने स्वरूप के सिर पर दो मरकत मणी के हाथी के बच्चों के मुख पर स्वर्ण कलस यंत्र द्वारा आया हुआ सुगन्धित उचित बना हुआ जल से सखियां नहवा देती हैं उसी चौकी के आगे १ छोटा सा कुन्ड में यन्त्र द्वारा जल भर के अपने स्वरूप को सखी कुन्ज में नहवाती हैं यह जल गरमियों में ठंडा और ठंडी दिनों में गरम रहता है। कुन्ड में से निकल कर अपने स्वरूप को बस्त्र से अंग पोंछ

गीला वस्त्र उतार कर दूसरे कुन्ज में जाकर वस्त्र बदले फिर दूसरे कुन्ज में जाकर नख से शिख तक शृंगार कर दिया १६ शृंगार १२ आभूषणों से पूर्ण सजी हुई इस कुन्ज से दूसरे में एक सिंघासन पर बैठ कर दर्पण द्वारा निज सरूप को प्रिया प्रियतम के सेवा योग्य अनुसन्धान करके दूसरे सभा कुन्ज में अपनी समस्त सखियों की प्रतिक्षा में बैठी हुई है तब तक प्रधान पूजा के तीन थालों को लेकर तथा अन्य सेवा सौज लिये हुये सब सखियों के साथ अपना सरूप आचार्य कुन्ज में आ पहुँचीं। आचार्य निज सरूप की तरह से अपनीं सखियों द्वारा उत्थापन दतौन तेल उबटन स्नान वस्त्र भूषण शृंगार सजावट समाज सहित बैठी हुई अपने सरूप की प्रतीक्षा में है।

आचार्य पूजा।

तब तक अपना सरूप भी आचार्य्य जी के पास पहुँच कर उपायन भेंट रूप में १ मणि मय हार पहिना कर आचार्य्य की फूल माला अतर चन्दन फूल हाथ में देकर अर्घ पाद्यादिक आरती करके पुष्पाञ्जली तृन तोड़ कर राई लौंन उतार कर दो परिक्रमा जुहार माला प्रसादी आशीर्वाद पा के साथ में विराजे तब तक वन्दी कन्या की प्रार्थना पर निज सरूप आचार्य्य के साथ श्रीमती सर्वेश्वरी जू के महल में उत्तर फाटक से गई। सर्वेश्वरी जी भी अपनी सखियों द्वारा उत्थापन दतौन तेल उबटन स्नान शृँगार आदि युत सभा कुञ्ज में बैठी अपने सरूप की प्रतीक्षा कर रही हैं।

श्री सर्वेश्वरी जू की पूजा।

तब तक आचार्य्य के सहित अपना सरूप समाज मंगल गान पूर्वक दिव्य दर्शन किये। प्रथम आचार्य्य श्री सर्वेश्वरीजू को एक मणियों की माला एक फूल की माला पहिरा के अतर लगाई फूल हाथ में दिये निज सरूप के सहित दो परिक्रमा करके जुहार किये, आशीर्वाद फूल माला प्रसादी पाके साथ में बैठ गईं। पीछे अपना सरूप भी एक मणियों की माला एक फूल की माला पहिरा के अर्घ पाद्य आरती जुहार किये। श्री सर्वेश्वरीजू फूल माला प्रसादी देकर बाँह पकर के बगल में बैठा लिये। गन्धर्व कन्यायों की प्रातः कालीन स्तुति सुन कर तथा कनक भवन की युथेश्वरियों को रंग महल में आई हुई हैं सुन कर के सर्वेश्वरी जी भी अपने समाज आचार्य्य स्वसरूप सहित चली। उस सभा कुन्ज में बाहर ओसारा ही ओसारा उत्तर तरफ आंगन में आकर पंच गाड़ी में बैठ के बाहर उत्तर फाटक से चोक से आकर सीधे रंग महल में पूर्व तरफ खम्भावली ओसारा में आकर उतरीं सर्वेश्वरीजू को आई हुई जान कर समस्त युथेश्वरी खड़ी होकर आगे स्वागत को आई उन सब युथेश्वरियों के सहित सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जी रंग महल के दक्षिण खम्भावली ओसारा में वेदी पर सिंघासन में बैठी। युथेश्वरियों के

जुहार किया देव कन्यायें गाने लगी यह सुनकर फाटक पर पहरा करने वाली दासियों की युथेश्वरी रंग महल के दक्षिण तीनों आवर्ण के फाटकों को खुलवा कर स्वयं श्री सर्वेश्वरी जी को जुहार करके शयन कुन्ज में प्रवेश करने के लिये प्रार्थना किया ।

श्री रंग महल का प्रसंग–

सर्वेश्वरी जी मुख्य जो निमि बंशी कन्यायों को साथ लेकर शयन कुन्ज के तीनों आवर्ण नौ खण्डा महलों के भीतर जाकर स्वयं वीणा लेकर तथा शयन कुन्ज के खम्भावली परदाओं में से एक परदे को खुलवा कर परिक्रमा करती हुई श्री युगल सरकार को गान कर जगाने लगी । आवरण भर के परदे यंत्र द्वारा अपने आप खुलने लगे । इस प्रकार समाज सहित श्री सर्वेश्वरीजू एक परिक्रमा करके अब दूसरे आवरण खम्भावली के परदा को खोलकर फिर परिक्रमा करती हुई गाने लगी । इस प्रकार दो परिक्रमा होने पर अपना स्वरूप सर्वेश्वरी जी की आज्ञा से तीसरे आवर्ण परदा के भीतर श्री युगल सरकार के पलँग के पास आकर चरणों में जुहार कर दोनों सरकार को उठने की प्रार्थना करके वस्त्र पहिराई केश भूखण सुधार दिव्य चौकी पर धरे हुये पाग चन्द्रिका आदि पहिराई गीले कपड़े से मुख पौंछ कर पलँग के पूर्व भाग पांव दाना रखके दोनों सरकार को पलँग पर से उतारे,

प्रीतमजू किशोरी जी को अपनी गोदी में लेकर पलँग पर बैठ गये अपना स्वरूप गेंडुआ मसलन्द तकिया लगा दिये। सर्वांग दर्पण दिखा दिये। श्री किशोरी जी के नेत्र इशारा पर एक खंभा के पेंच को ऐंठ दिये तो सम्पूर्ण आवरण परदे अपने आप खुल गये।

समाज सहित सर्वेश्वरी जू इस प्रकार से समीप आई कि दो सखी दही थाल युगल सरकार को दिखाई न्योछावर किया, बांये चली गई इस प्रकार दो थाल घृत, दो थाल मधु, दो थाल वस्त्र दो थाल भूषण दो थाल मिठाई, दो थाल रत्न कुल १४ थाल न्योछावर कर श्री सर्वेश्वरी जू जुहार किये बगल में बैठ गई, अन्य सखी भी जुहार चँवर छत्र दर्पण गान किये। अपना सरूप एक थाल पुष्पों का दिखाके दोनों सरकार एक २ फूल उठा कर परस्पर सुंघाये, बाकी फूल न्योछावर कर अपना सरूप अर्घ पाद्यादि आरती करके राई लोन उतार तृण तोर पुष्पाञ्जली, फूल न्योछावर, अपना बलैया लेकर जुहार किये। श्री किशोरीजी ने कर कमल स्वसरूप के सिरपर स्पर्श किया आशीर्वाद पाय बगल में खड़ी होकर श्री किशोरी जी बांह कन्धे में लेकर एक सखी सरकार की तरफ इस प्रकार पलँग पर से उठके वहीं पर आराम कुर्सी पर बैठ के सखियों द्वारा आचमन कुल्ला कर पीछे अंगूर सन्तरा सेव आदि कुछ फल पाके झारी में दूध पिये कुल्ला कर पान पाये अतर लगाये। तब तक तीनों आवरण नौ खन्डा महलों के पूर्व दिशा के प्रधान तीनों फाटक

खुल गये फूल पांवड़े पड़ गये बाहर जितनी सखियां थीं सब भीतर शयन कुंज के पास गीत गाती आ गईं, दोनों सरकार उठे बाहर आये साथ की सखियां विविध प्रकार के पक्षियों के पींजरा मृगी हंसी आदि खिलौना फूल फल जवांकुर वस्त्र भूषणादि मंगल द्रव्यों को तथा सूर्यमुखी, चन्द्रमुखी, बल्लम, छड़ी आदि राजकीय पदार्थों को हाथ में लिये दोनों सरकार के साथ चल रही हैं। इस प्रकार देव कन्यायें गान किये बन्दी मागध सूत इनकी कन्याओं से नकीब गान बंस बिरदावली गान हुआ दोनों सरकार अलग २ क्रमशः सखिओं के कंधाओं में हाथ रख कर विरदावली सुनते हुये ३ आवर्णों के फाटकों से बाहर आये। लाल सफेद खम्भावली बीच बेदी के ऊपर सिंघासन में विराजे। जो सखी भीतर शयन आरती में नही जा सकी थीं वे सब यहां आरती करती हैं। सब अपने ही सम्मुख युगल सरकार को देखती हैं। इस प्रकार आरती अर्घ पाद्यादि जुहार होने के बाद गान द्वारा सखी की प्रार्थना सुन के बाग विहार के लिये समाज सहित चल पड़े।

बाग विहार।

पूर्व तरफ बाग के चौराहा में से दक्षिण घूम कर अग्नी कोण के सामने मछलियों का कुन्ड में पेड़ा की गोली पवाये इस प्रकर यहाँ से उठ कर बाग बिलास देखते हुये नैऋत्य कोण पर कुन्ड में हंसों को मोती चुंगा कर फिर वहाँ से वायू कोण पर हाथी के बच्चों को कौतुक पूर्वक

लड्डू खिलाये इस प्रकार बाग में टहलते हुये ईसान कोण पर वेदी में बैठ कर मन्जरी सखियों द्वारा नचाये गये हुये मोरों का विनोद पूर्वक नृत्य देख कर के फिर समाज सहित पूर्व दिशा बगीचा को देखते हुये मध्य चौराहा में आये तो चन्द्रावरण पूर्व द्वार प्रथम चौक के फाटकों पर दुंदुभी बाजी फाटकों पर रहने वाली सखियाँ मंगल द्रव्य मंगल गीत गाती देख कर श्री युगल सरकार अति प्रसन्न होकर देखे, चौक में आये, दक्षिण फाटक से प्रवेश करके हिंडोला कुन्ज को गये।

१ हिंडोला कुन्ज—

चारों तरफ एक आरवण नौ खन्डा महल है चारों दिशा फाटफ मध्य बाग के बीच सरोवर के चारों तरफ मणिमय घाट बने हुये हैं अगाध जल के मध्य एक माणिमय कमल है जिस के दल २ प्रति खम्भावलियों के तीन आवरण हैं, जिन पर मणिमय छत अति सजावट के साथ गोल मन्डलाकार बना हुआ है। इन तीन आवरण खम्भावलियों के मध्य कमल कर्णिका के आँगन में अति रमणीय हिंडोला के दो खम्भा गड़े हैं जिनके ऊपर देव कन्याओं के आकार पर मणिमय महराबों में झूला की डोरी नीचे को लटकी है, जिनमें मणिमय पेंच दार हिंडोला यंत्र का बना हुआ कभी सिंघासन के रूप में कभी हिंडोला के रूप में यंत्र ऐंठते ही अपने आप बन जाता है। इस प्रकार के इस

हिंडोल कुन्ज में आने जाने के लिये कमल के उत्तर व दक्षिण यंत्रमयी पुल मणिमय बना दिये जाते हैं। दोनों सरकार समाज सहित कुन्जेश्वरी श्री चन्द्रकान्तीजी व श्री चन्द्रप्रभा जी द्वारा स्वागत पाकर उत्तर पुल से कमल मध्य हिंडोल कुन्ज में सिंघासन पर बिराजे, कुन्जेश्वरी द्वारा फल पाये, पान पाये आरती, न्योछावर, राईलोन, तृण, बलैया, जुहार, भी हुआ। फिर यंत्र द्वारा ही सिंघासन झूला बन कर आठ सखी सरकार के अगल बगल में की श्रीमती श्री चारुशीला जी तथा लक्ष्मणा जी ,पदगन्धा जी, बारोहा जी, शुभगा जी, सुलोचनाजी हेमाजी, क्षेमाजी, बैठी हैं। तथा श्री किशोरीजी, के अगल बगल में श्री प्रसादा जी, तथा श्री बिमला जी, श्री सुशीला जी, श्री विश्वमोहनी जी, श्री अतिशीला जी, श्री बागीशा जी, श्री हरिप्रिया जी, ये ८ सखी बैठी हैं। तथा सरकार के पीछे और किशोरी जी के पीछे भी आठ २ सखियाँ झुलाने के लिये खड़ी हो कर दोनों तरफ पेंगा देकर झुलातीं हैं, बहुत सी सखी बाजाओं को बजाती हैं बहुत सीं सखी गाती और नाचती हैं। इस प्रकार पौने छः से साढ़े छः तक झूले तब तक वल्लभ कुन्ज से श्रीशम्भी जी श्री शीला जी से प्रेषित दूती सखी आई, गान करके आवाहन किया, सुन कर श्री किशोरी जी के कृपा कटाक्ष के इशारा पर सर्वेश्वरीं जू ने झूला रुकवाया दोनों सरकार गलबाहीं दे समाज सहित दक्षिण पुल से पार हो कर पंच गाड़ी में बैठे सामने दक्षिण फाटक

पर पहरा वाली दासियों ने दुंदुभी बजाई मंगल थार युक्त गान हुआ, दोनों कतार सखियों के स्वागत से पेंच गाड़ी से कोंना पर के गोल घर में से वल्लभ कुन्ज के पूर्व फाटक के भीतर श्री सीताराम जी गये ।

२ वल्लभ कुन्ज

चारों तरफ़ एक आवरण नौ, खण्ड़ा महल, चारों दिशा फाटक भीतर बगीचा के बीच फिर एक आवरण नौ खंडा महल, चार फाटक, भीतर आँगनबीच तीन आवरन खम्भावली ओसारा सहित एक आवरण अष्ट कुन्ज चारों दिशा फाटक भीतर फिर आँगन के बीच में तीन आवरण खम्भावली ओसारा चार दरबाजे भीतर हाल इस प्रकार के बँगला के बीच हाल में चित्र बिचित्र चारों तरफ चित्रकारी झाड़ फनूसादि सजावटों से युक्त मध्य गलीचा के ऊपर १ सूर्य्य कान्त मणि का स्वास्तिक चिन्ह के मध्य ६, ८; १२, १६ दल के कमल पर दल २ प्रति सखियों का बैठक गद्दी लगी है। मध्य कर्णिका में मणिमय सिंघासन है। दोनों सरकार बैठते हैं। दोनों सरकार पूर्व से पेंच गाड़ी द्वारा पूर्व फाटक से भीतर आँगन से अष्ट कुन्ज के ओसारा पर उतरे, उत्तर कुन्ज में आकर के अलग २ दो चौकियों पर बैठ के सखियों द्वारा चरण प्रक्षालन, दतौन, जीभी कुल्ला, वस्त्र मार्जन होकर पूर्व कुन्ज में मंगल शृँगार होकर पुष्प पाँवड़ों, मंगल कलसादि द्रव्य, गान द्वारा भीतर आँगन में

बँगले के अन्दर कमल सिंघासन पर दोनों सरकार बैठे। दल २ प्रति सखियाँ बैठी। दही, घृत, मधु, वल्लभफलहारी मिठाई, मेंरेय पाकर। पान, अतर, फूल माला, पहिरा के न्योछावर, आरती, आशीरवादात्मक गीत, परिक्रमा, जुहार हुवा। मुख्य सखि अष्ट कुन्जावरण के पश्चिम कुन्ज में चरणामृत वल्लभभोगादि प्रसादी पाकर आई। अपना सरूप समाज सहित दोनों सरकार को मंगल गीत नृत्य से प्रसन्न किये। तब तक एक सखी के हाथ से पान का थाल लेकर आई हुई मुख्य सखियों को पान दिये। वाद अपना स्वरूप भी समाज सहित पश्चिम कुन्ज में चरणामृत प्रसादी पाकर के लौटी समाज में आई पान पाई। तब तक स्नान कुन्ज की दूती गान आवाहन किया। सुनकर दोनों सरकार समाज सहित स्नान कुन्ज को चले। पश्चिम फाटक अष्ट कुन्ज खम्भावली ओसारा के किनारे पेंच गाड़ी में वैठकर चले। फाटक बाहर वाग के पश्चिम फाटक द्वार पर दुंदुभी वजी मंगल दृष्य गान देखकर स्नान कुन्ज में प्रवेश किये।

३ स्नान कुन्ज।

चारों तरफ १ आवरण नौखन्डा महल, चारों दिशा फाटक, बीच वाग के मध्य एक सरोवर है। जिस तालाब के चारों किनारे चार महल हैं। पूर्व फाटक से पेंच गाड़ी में युगल सरकार आये। तालाव के पूर्व किनारे में महल के पेट होकर पेंच पुल द्वारा तालाब के पश्चिम किनारे महल में पुल से उतर कर कुन्ज में कुन्जेश्वरी श्री मोदाजी व प्रमोदाजी

फूल, माला, पान देकर आरती, जुहार, किया। फिर तेल, उबटन अलग २ दो चौकियों में विनोद पूर्वक हुआ, यह कुन्ज सरोवर के पश्चिम घाट पर ऊपर बगीचा के बराबर में है। इसी तेल उबटन कुन्ज की सीढ़ी द्वारा भीतर ही भीतर नीचे कुन्ज के पश्चिम घाट पर उतरे। सीढ़ी से उतर बगल में वहीं घाट पर दो कुन्जों में दोनों सरकार अलग २ कुन्जों में अष्ट कोण नील पीत चौकियों पर बैठ कर यंत्र की सखियों के हाँथ शंख द्वारा सुगन्धित जल से सरकार का स्नान हुआ, । छोटा सा यंत्र द्वारा भरे कुन्ड में सखियों से बिनोद पूर्वक स्नान करके सरकार किशोरीजी के कुन्ज में आये। नील मणि की अष्ट कोण की चौकी पर बैठी हुई किशोरी जी को मरकत मणि के हाँथी के बचों के सूँड़ में स्वर्ण कलस द्वारा सुगन्धित जल द्वारा सखियाँ नहवाई। दोनों सरकार इकट्ठा बिनोद करके समाज सहित घाट पर आकर जल में कूदे, जल विहार हुआ।

कवित्त—

आज रघुलाल जल केलि करें तियन में सियन में शशि मणि सिया संग बाल हैं ॥
अद्भुत ताल तामें बस्यो रसराज मानो काढ़ैं हारि सुखमा सकेलि बर जाल हैं ॥
त्रिबिध तियान संग बाढ़्यो रसराज जंग बूड़ि बूड़ि परसें तन महा रस ख्याल हैं ॥

बाहेर निकासें काहू नवला को ऐंचि ऐंचि कहाँ लौं बखानों करैं कोटिक कुचाल हैं ॥

तालब के बीच मणिमय कमलाकार जाट है। नीचे तालब के भीतर से सीढ़ी द्वारा जाट के ऊपर चढ कर जल में कूदते हैं, दूसरे को गिराते हैं। ताल के भीतर गुप्त महल भी बने है। जिनमें जल नहीं प्रवेश करता प्रकाश स्वाभाविक रहता है। रास्ता जल के भीतर ही से है। इस प्रकार के गुप्त महलों में भी अनेक प्रकार के विलास होते हैं। एक दूसरे को तैरना सिखाना, सीखना, कमलों की मार, कर पिचकारी से जल छिड़कना आदि बहुत प्रकार के खेल होते हैं। इस प्रकार जल विनोद होने पर अपना स्वरूप समाज सहित प्रथम ही उत्तर घाट के दालान में वस्त्र बदल कर तैयार रहे। तब तक दोनों सरकार सखियों के सहित जल में तैरने की बाजी पूर्वक उत्तर घाट पर आते हैं। अपना स्वरूप समाज दोनों सरकारों को अलग २ अंग मार्जन करके सफेद वस्त्रों को पहराये। वहीं दालान के और भीतर एक यंत्र के सिंघासन में बैठकर यंत्र द्वारा ऊपर दुखण्डे में यज्ञ शाला के आंगन में आकर उतरे। सखियां सीढ़ियों द्वारा आई।

यज्ञ मंडप।

यज्ञशाला में चारों तरफ आठ कुंज हैं। धेनु, वस्त्र, भूषण, रत्न, बर्तन, सींधा अन्न, पक्का अन्न, वाहन ये आठ चीजें कुंजों में हैं। आँगन के

मध्य कल्प वृक्ष के नीचे मणि मय वेदी के ऊपर तीन आसन बिछे हैं। तिन पर उत्तर श्री प्रीतम जी बीच में श्री किशोरी जी दक्षिण अपना स्वरूप बैठे। तब बेद श्रुति ब्रह्मण की कन्या रूप से सब विधि करवाती हैं। तीनों जने आचमन किये, अपने २ इष्ट देव का ध्यान किये, युगल मन्त्र से पायस की बारह आहुती हवन किया तथा एक आहुती घृत की तथा एक आचवन सीतल आहुती जल की देकर एक परिक्रमा किये। इस प्रकार यज्ञ हुआ। अब दान विधि कहते हैं-सरूप के हाथ से दहीं हरदी मिश्रित अक्षत्तों को लेकर किशोरी जी द्वारा श्री प्रीतम जी दान करने योग्य ८ कुन्जों की सम्पति में छिरिक देते हैं। इस प्रकार दान हुआ, हाथ धाये।

यज्ञ शाला से उत्तर तरफ पति पूजन कुन्ज इस प्रकार है। एक आवरण नौ खन्डा महल है चारों दिशा फाटक मध्य आँगन में बँगला इस प्रकार है-कि तीन आवरण खम्भावली ओसारा, अष्ट कुन्ज, बीच हाल है। युगल सरकार दक्षिण तरफ अष्ट कुंज के दो कुंजों में अलग २ शृंगार सखियों द्वारा किये, फिर प्रीतम को मध्य हाल में गये हुये अपने स्वरूप द्वारा जान कर हाथों में फूल माला लेकर मुख्य सखियों के साथ श्री किशोरी जी प्रीतम का इस प्रकार पूजन करती हैं। सखी के हाथ से चन्दन, धूप, दीपवत्ती, माला आदि लेकर प्रीतम को चढ़ा के ४ परिक्रमा करती हैं। मंगल गीतों सहित सखियाँ भी परिक्रमा करती हैं। इस प्रकार पूजित होकर

प्रीतमजू अपने गले की प्रसादी माला श्री किशोरी जी को पहिराके गोदी में बैठा लेते हैं सखियाँ सब जय कार, मंगल, गीत, आदि पूजन करती है। प्रणाम करके माला प्रसादी पाकर चँवर छत्र आदि युक्त अगल बगल हो जाती हैं। अब अपना सरूप श्री युगल सरकर का पूजन, आरती, प्रणाम, माला प्रसाद पाकर किशोरी जी के पास खड़ी हो जाती है। तब तक कलेऊ कुन्ज की दूतियों से स्तुति, आवाहन होने पर समाज सहित कलेऊ कुन्ज जाने वाली पेंच गाड़ी में बैठ गये। स्नान कुन्ज पश्चिम फाटक से दुंदुभी मंगल दृष्य देख कर कलेऊ कुन्ज में दक्षिण फाटक से प्रवेश किये।

४—कलेऊ कुन्ज।

एक आवरण नौ खन्डा महल, चारों दिशा फाटक, मध्य में बाग, तथा बाग के बीच में कलेऊ कुन्ज का पुनः एक आवरण नौ खन्डा महल, चारों दिशा फाटक, मध्य में आँगन के अन्दर तीन आवरण खम्भावली ओसारा, चारों तरफ चार फाटक, भीतर हाल में कलेऊ होता है। युगल सरकार स्नान कुन्ज से आकर कलेऊ कुन्ज के दक्षिण खम्भावली ओसारा में बैठ कर कुन्जेश्वरीजी द्वारा धूप, दीप, आरती हो कर बीच हाल में आकर अष्ट, षोड़स, बत्तिस, चौसठ आदि युथेश्वरियों के साथ कलेऊ किये। गान बजाना युत कलेऊ, आचमन, मुख मार्जन करके उत्तर खम्भावली ओसारा में आ विराजे। अपना स्वरूप पान इतर आदि देकर तब स्वयं भी अपने समाज के साथ

प्रसाद पाकर समाज में आये, पान पाये, गान हुआ। तब तक शृंगार कुन्ज की दूतियों से स्तुति आवाहन द्वारा श्री युगल सरकार समाजसहित पेंच गाड़ी में बैठकर शृंगार कुन्ज को गये।

५ शृंगार कुन्ज।

एक आवरण चारों तरफ नौ खन्डा महल, चारों दिशा फाटक, बीच बाग के अन्दर एक आवरण नौखन्डा महल, चारों दिशा फाटक, बीच आँगन में तीन आवरण खम्भावली अष्ट कुन्ज, चार दरबाजे, बीचहाल है। श्री युगल सरकार कलेऊ कुन्ज से आकर शृंगार कुन्ज के अष्ट कुन्ज के दक्षिण दो कुन्जों में अलग २ शृंगार हुआ। चरण महावर, बिछिया, अँगूठी, पायजेब, पेटी कोट, लहँगा, नील रंग कंचुकी, अंगा, करघनी..चम्पाकली. चन्द्रहार, पदिकहार, नील मणि की गलपोती, बाँह बिजायठ, चूड़ी, कंकन, अंगूठी, अरसी, पान सीकरी, तरौना, नथबेसर चिबुक में श्यामबिन्दु, कपोल पत्र, अन्जन, खोर, तिलक, चन्द्र-विन्दु. विन्दी, वन्दी, शीश फूल, माँग लरी, सिन्दूर, चूड़ामणि चोटी, चूनरी, चन्द्रिका, कलँगी, सिर पाग, पेंच, तुर्रा, कुन्डल, जूल्फें, खौर, तिलक गोती लर, कपोल पत्र, अन्जन, नासामणि, चिबुक में पीत विन्दु, कन्ठा, मोतीमाल, पदिकहार, बिजायठ, कंकन, अँगूठी, बागा, जामा, पेटी, पीताम्बरी, कटि मेखला, चरण में नूपुर, अँगूठी, महावर, आदि भूषणों से युगल सरकार का तथा इसी प्रकार सरवेश्वरी जी आदि सब यूथे-

श्वरियों का भी बृहद् ठाट बाट से शृंगार हुआ। मध्य हाल में सिंघासन पर बैठे। छत्र, चँवर, झुर्छल, सूर्य्यमुखी, चन्द्र मुखी, गौमुखी, स्वर्ण छड़ी दर्पणादि सजावटों से सजे हुये दोनों सरकार समाज सहित बैठे। फल, पान आदि पवाके कुन्जेश्वरीजी ने आरती तथा वस्त्र, भूषण, भोजन रत्नये चार चीजें नेवछावर करके राई लोन, तृन तोड़के, बलैया, जुहार, गाना, बजाना, नृत्य, किया।

तब तक सभा कुंज से गन्धर्व कन्या सखी दूती रूप में आई, स्तुति, आवाहन पूर्वक बन्दी कन्याओं से नकीब गान द्वारा उत्तर तरफ बाहर बगीचा के बीच बेदी में चार बिमान हैं। पुष्पक, अदृष्य, मनोग, सर्वगत, इन चारों में से सर्वगत बिमान में बैठ कर सभा कुन्ज में गये।

६ सभा कुन्ज।

एक आवरण चारों तरफ नौखन्डा महल है। चारो दिशा फाटक, मध्य में आँगन हैं आँगनके मध्य फिर एक आवरण नौखन्डा महल हैं चारों दिशा फाटक मध्य में सभा कुन्ज इस प्रकार है कि नौखन्डे के एक २ खन्ड हैं, इसी प्रकार नौखन्डे का सभा कुन्ज है। जिसका प्रत्येक खन्ड नौ उत्सवों का है जैसे कि सबसे ऊपर का खन्ड सभा खंड है। जिस सभा खन्ड के बाहर चारों तरफ छज्जा है और तीन आवरण खम्भावली का ओसारा भी है। एक आवरण नौखन्डा महल के अधार पर है चारों दिशा चार फटक हैं।

नौखन्डा महल के मध्य में विसाल हाल है। विविध प्रकार के विलास तथा चौपड़ खेल खेलने के चौकियां चारों तरफ हैं। जिन में देव, गन्धर्व, किन्नर, पन्नग, सिद्ध, साध्य, चारण, विद्याधर, गुह्यक और अज्ञात तथा गोप, राज, निमि, आदि वंसों की कन्याओं का प्रत्येक झुन्ड अलग २ चौपड़ श्री रघुनाथ जी के ही साथ खेलते हैं। उस सभा खंड हाल के ठीक मध्य में एक कल्प बृक्ष के नीचे लक्ष दल मणिमय कमल का सिंघासन हैं जिसके प्रत्येक दल २ प्रति यथाधिकार सखियों के साथ बैठने की गद्दी, जरीदार तकिया, मसलंद आदि से सर्जी हुई हैं। मध्य कर्णिका पर श्री सीतारामजी के बैठने की गद्दी हैं। चारों तरफ अष्ट, खोडस, बत्तिस, चौंसठ, आदि प्रकार युथेश्वरियों का बैठना होता हैं।

श्री युगल सरकार शृंगार कुंज से सभा खन्ड के नैऋत्य कोण छज्जा पर सर्वगति विमान से समाज सहित उतर कर के दाहिना वर्त प्रत्येक छज्जाओं में बैठ २ कर दुर्वीन द्वारा प्रत्येक दिशाओं की राजधानियों की राज कन्यायों को उनके नैहरादि दिखाते हुये कौतुक विलास पूर्वक ईशान कोण पर के छज्जा की दुर्बीन से मिथला जी में किशोरीजीके माता पिता आदि को देख कर विह्वल हुई किशोरी जी को प्रीतम गल बाँही लेकर दुर्वीन बन्द करके, इसी प्रकार दक्षिण छज्जा से श्री चक्रवती दशरथजी महाराज के राज गद्दी पर आये हुये राजाओं का दर्शन तथा उनकी कन्यओं को—(देखो हमारे

पिता के सामने तुम्हारे पिता चन्द्रमा के सामने तारा की तरह छोटे लग रहे हैं) कहके सखियों का मान छुड़ाते हुये सभा खन्ड के दक्षिण फाटक से मध्य हाल में कल्प बृक्ष के नीचे लक्ष दल मणिमय कमल की गद्दी पर यथाअधिकार परिकरों के सहित बैठ कर कुन्जेश्वरी द्वारा फल पाके आरती, नेवछावर, प्रणाम, हो के गन्धर्व कन्याओं द्वारा गान तथा प्रत्येक लोक की आई हुई देव, नाग, स्त्रियों के तथा निजी परिकर समाजों के प्रत्येक जाति के अनुसार अलग २ झुन्डों में अनन्त रूप धारण कर के श्री श्याम सुन्दर राज नन्दन जी चोपड़ खेलते हैं। तथा और बहुत लीलाओं का प्रसंग श्रीं किशोरी जी की रुची के अनुसार बहुत से कौतुक नित्य प्रति प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक होते हैं। इसी प्रकार सभाखन्ड नीचे आन्दोल खन्ड, साँझि खन्ड, रास खन्ड, दीपावली खन्ड, उद्वाह खन्ड, होली खन्ड, बधाई खन्ड, सर्वोत्सव खन्ड इन आठ खन्डों, में भी यथा ऋतुओं के अनुसार उत्सव हुआ करते हैं। इन नवों खन्डों का प्रधान रंग अलग २ है। जैसे सभा खन्ड स्वेत, इसी क्रम से पान्डूल, धूसर, पीत, श्याम, अरुण, रक्त, हरित, पिंगल रंग के अन्य खन्ड, भी हैं इस प्रकार सभा कुन्ज का वर्णन हुआ।

७ भोजन कुन्ज।

चारों तरफ नौ खन्डा महल चार फाटक बीच बगीचा है। बगीचा के अन्दर एक आवरण नौ खन्डा महल चार फाटक भीतर आँगन में नौ आवरण खम्भावली ओसारा चार फाटक भीतर हाल में भोजन होता है।

इसका क्रम इस प्रकार है ११ बजे भोजन कुन्ज की दूती सर्व गत बिमान में बैठकर नित्य नियम अनुसार जहाँ भी युगल सरकार हों पहुँच कर भोजन की प्रार्थना करती हैं। दूतियों की प्रार्थना सुनके दोनों सरकार सर्वगत बिमान में बैठ कर आकाश मार्ग से भोजन कुन्ज के पश्चिम तरफ बगीचा में वेदी के ऊपर उतरे। कुन्जेश्वरी मंगल दर्शन गीत स्वागत पूर्वक पश्चिम फाटक से भीतर आँगन में वेदी पर बैठा के पाँव धोई, शृंगार बदली, आरती किया। भीतर हाल में लाई, समाज सहित सब को भोजन कराई। दाल, भात, रोटी, साग, चटनी अचार, पापड़ पुआ, तिलौरी, मुंगौरी आदि बिबिध प्रकार के षट रस भोजन गान बिनोद पूर्वक पवाई। समाज सहित भोजन पाके आचमन कुल्ला करके हाल से पूर्व दरबाजे खम्भावली के किनारे पर से पेंच गाड़ी में बैठ कर अपने स्वरूप के हाँथ पान पाके सर्वेश्वरी सब सखियों सहित शयन कुन्ज में चले गये। अपना स्वरूप समाज सहित लौट के प्रसाद पाके अचबाये पेंच गाड़ी में बैठ के शयन कुन्ज खम्भावली पूर्व ओसारा में युगल सरकार के समीप आ बिराजे, पान पाये।

८ शयन कुन्ज।

एक आवरण चारों तरफ नौखन्डा महल, चारों दिशा फाटक, मध्य बाग के अन्दर तीन आवरण पीत, लाल, सफेद, रंग के खम्भावली ओसारा, तीन आवरण नौ खन्डा पीत, लाल, सफेद महल के बीच आंगन में लक्ष दल मणि मय कमल के

ऊपर दल २ प्रति तीन आवरण पीत, लाल, सफेद, खम्भावली मध्य कार्णिका पर शयन करने का पलंग है। जिसका वर्णन (अमिलौजा पर्यंकः) इस प्रकार वेद में आता है। अर्थात् अमित पराक्रम को बढ़ाने वाला पर्यंक है। युगल सरकार को शयन कुन्ज के बाहर पूर्व ओसारा में से सखियां प्रार्थना करके भीतर पलंग पर बैठा के आरती कर, दूध पिला, गान, विनोद सहित शयन कराई। तीन आवरण खम्भावाली में चारों तरफ परदे पड़ गये कुछ सखी ३ आवरण नौ खन्डा महलों के कुन्जों में जहां तहां शयन करने गईं। और सब सखी तीन आवरण महलों से बाहर खम्भावली ओसारा में किसी को दुलहा किसी को दुलहिन बना के व्याह आदि विविध कौतुक करती हैं। इस प्रकार १२ बजे से ३ बजे तक मध्यान्ह शयन कुन्ज का वर्णन हुआ।

उत्तरार्ध प्रसंग

अब दिन ३ बजे से रात के ३ बजे तक का प्रसंग इस प्रकार है :—महाराज चक्रवर्ती जी के राज कचहरी में दिन के ३ बजे राज दुन्दुभी बजी जिसको सुनकर श्री अयोध्या शहर के सब चौराहों में तथा कनक भवन ४ द्वार १४ आवरण के सब ५६ चौकों में भी दुन्दुभी बजती है। जिसको सुनकर सभी कर्मचारी परिकर यथा अधिकार अपने २ कार्यों में अदल बदल कर लग जाते हैं। युगल सरकार के सभी परिकर सहचरी

गण शयन कुन्ज में जगाने के लिये मंगल गीत गाती हैं। जिस को सुनकर श्री सर्वेश्वरी चारुशीला जी आकर सखियों को युगल सरकार को जगाने में प्रेरणा करती हैं। परिक्रमा पूर्वक स्वयं भी गीत गाके जगाती हैं। अपना स्वरूप सर्वेश्वरी जी की कृपा दृष्टि से परदा के भीतर पलंग के पाश जाकर श्री युगल सरकार को प्रणाम करके जगाई, वस्त्र पहिराई, केश सुधारी, गीले वस्त्र से मुख मार्जन, दर्पण दिखा, पलंग बैठाय, तकिया मसलन्द लगाय, परदा खोल दिये। सखी, गण मंगल साज सहित इस प्रकार सामने आती हैं—दो सखी हाथ में वस्त्रों के थाल दिखाया, दो सखी भूषणों के थाल, दो सखी मिठाई के थाल, दो सखी रत्नों के थाल नजर न्योछावर करके बगल हो गई। श्री सर्वेश्वरी जी आदि सब सखी जुहार किया, अपना सरूप फूल के थाल न्योछावर, आरती, राई, लोन, तृण तोड़ के बलैया जुहार किये। दो सखी के कन्धाओं पर हाथ रखके दोनों सरकार पलंग पर से उठ कर लक्ष दल कमल के शयन कुन्ज से बाहर आंगन में आराम कुर्सी पर बैठ कर कुल्ला करके पेड़ा पा करके दूध पिये, आचमन, पान पाके सामने सफेद आवरण के कुन्ज में तेल उपटन कर बाहर आए। अब यहां के स्नान की दो प्रकार बिधि है। एक ठंडी दिनों का दूसरा गर्मी दिनों का। पहला वर्णन ठंडी का इस प्रकार हैं—दूसरे लाल आवरण महल के एक कुन्ज में अलग २ दो अष्टकोण की चौकियों पर यंत्रों से गरम जल से समाज सहित स्नान

करके तथा उसी कुन्ज में एक कुण्ड में यन्त्र से गरम जल भर के जल बिहार करके दूसरे कुन्ज में बस्त्र बदल कर तीसरे कुन्ज में सब समाज सहित इकट्ठा हुये। इस प्रकार उस बीच के लाल आवरण के बाहर पीत आवरण के पूर्व फाटक से बाहर ३ आबरण खम्भावली ओसारा के किनारे पेंच गाड़ी में समाज सहित बैठकर मध्यान्ह शयन कुन्ज के पूर्व फाटक से बाहर दूसरे आबरण में बसंत अनुरूप बन में गये।

बसन्त अनुरूप बन।

चारों तरफ एक आवरण नौ खन्डा महल चार फाटक मध्य बाग बीच फिर एक आवरण नौ खन्डा महल चार फाटक भीतर आंगन में बंगला— तीन आवरण खम्भावली ओसारा भीतर हाल है। पेंच गाड़ी से युगल सरकार पश्चिम फाटक से भीतर आके बसन्त अनुरूप बंगला के मध्य में सिंघासन पर बैठे। साधारण फूल शृंगार, अन्न का भोग, शर्बत आदि पाके आँचवन, पान, फूल, माला, आरती, जुहार किये। बाग बिहार करने गये। इस प्रकार क्वार दशहरा से फाल्गुन शुल्क पंचमी तक के मध्यान्ह स्नान बिधि को कहा।

अब फाल्गुन शुक्ल ६ से लेकर क्वार नौमी तक की मध्यान्ह स्नान बिधि लिखते हैं :—शयन कुन्ज के चन्द्रावरण के कुन्ज में तेल उपटन होकर बाहर आँगन में यंत्र के द्वारा पाताल में जाकर एक बाग है जिस बाग में चारों तरफ फूल,

लता, क्यारी आदि सजावटों से भरा हैं। उस बगीचा के बीच एक तालाव है जिसके चारों घाट मणि रत्न जटित हैं। पूर्व घाट पर महल का दालान है पश्चिम घाट पर बगीचे में दो कुन्ज हैं उन दोनों कुन्जों में दोनों सरकार का अलग २ स्नान होकर फिर तालाब में सब समाज सहित कूद पड़ते हैं। जल बिहार होता है। पूर्व दालान में वस्त्र बदल के समाज महित उसी दालान के भीतर सिंघासन पर बैठे। सब समाज इकट्ठा होने पर उसी दालान के भीतर सीढ़ियों द्वारा ऊपर चढ़ के बसन्त अनुरूप बन में आये। वहीं बन में पूर्ववत विधि से अन्न पाकर आरती हुई, बाग बिहार को चले। बँगले से उत्तर तरफ बगीचे में बेदी के ऊपर अदृश्य विमान पर समाज सहित बैठ गये। आकाश मार्ग से सीधा पूर्व अयोध्या से बाहर शृंगार बन में आये।

शृँगार बन का बिहार।

एक आवरण चारों तरफ नौ खन्डा महल, चारों तरफ फाटक, भीतर में बन, कुन्ज, लता, वृक्ष, पत्र, पुष्प, फल, बाबड़ी, कुण्ड, सरोवर, नहर, वेदी उपवन, कोकिल; मोर, हंस, पारावत, चकोर, भँवर, मृग, पक्षी, बन की सम्पति से सुशोभित। ऐसे शृँगार बन के मध्य में सात आवरण का महल प्रति ऋतुओं की शोभा से सजा तथा एक आवरण अष्ट सेवा कुन्ज सहित सातों आवरणों के चारों दिशाओं में चार द्वारों से युक्त इस प्रकार इस सप्ता आवरण महल के मध्य बिशाल बगीचा के बीच में

कलप बृक्ष के नीचे मनोहर रास मन्डप है। इस रास मन्डप के अग्नि कोण पर बगीचा में झूलन कुन्ज है। नैऋत्य कोण पर मनोग कुंज है। वायु कोण पर कलेऊ कुंज है। इसान पर शृंगार कुन्ज है। इसी शृंगार कुन्ज के उत्तर बगीचे में वेदी के ऊपर बिमान से उतर कर युगल सरकार इस शृंगार कुन्ज में आये। यह शृंगार कुन्ज ऐसा है—कि एक आवरण नौ खन्डा महल चारों दिशा चार फाटक भीतर आँगन में ३ आवरण खन्भावली चार दरबाजे भीतर हाल इस प्रकार बँगला है। नौ खन्डा महल के उत्तर दरबाजे से युगल सरकार भीतर आये आँगन में पूर्व तरफ श्री किशोरी जी सखियों के साथ तथा पश्चिम तरफ श्रीरघुनाथजी समाज सहित नखशिष पुष्पों के हीं वस्त्र भूषण आदि पुष्प मय सजावटों से सजे हुये दोनों सरकार इकट्ठे होकर भीतर बँगले में आये। पुष्प सिंघासन पर बैठ कर पुष्पमय छत्र, चँवर, व्यजन, बितान, बिछावन, बिलास, बोली आदि सजावटों से शीशा देखे, फल पाये, आरती हुई, बन बिलास के लिये पश्चिम दरवाजे से तथा पश्चिम फाटक से होकर बाग में एक बहुत बड़े तालाब के पश्चिम किनारे एक छोटे से कल्प बृक्ष के नीचे पुष्प सिंघासन पर बैठे। बन बिलास के लिये बिबिध रूप धारण करके अनंत सखियों के साथ अनंत बिबिध गुप्त प्रकट कुन्ज लताकुन्ज, उपकुन्जों, बनों में बिलास किये। इस प्रकार ४ से ६ बजे तक इस शृंगार बन का बिलास हुआ। साढ़े छै बजे इस बन से पँच गाड़ी में बैठ कर पूर्व तरफ सरयू जी के किनारे आये। शृंगार बन के घाट पर सरयूजी के तट पर कल्प बृक्ष के नीचे

पुष्प बितान, चवँर आदि से युक्त पुष्प सिंघासन पर बैठ करके सरयू के धारा का रंग, नधारी खेल, कमल पर भँवरों का गुन्जार सखियों का रचा बिबिध प्रकार का कौतुक देखने लगे। बाद को नाव से अथवा पैदल घाट ही घाट बिलास पूर्वक प्रमोद बन के घाट पर से प्रमोद बन के फाटक के भीतर प्रवेश करके फूल गेंदों के कौतुक पूर्वक प्रमोद बन रास मन्डप में आये।

प्रमोद बन।

चारों तरफ एक आवरण नौ खण्डा महल, चारों दिशा फाटक बीच प्रमोद बन, लता, बृक्ष, बापी, कूप, तड़ाग, मणि मय घाट बेदी, चित्र बिचित्र मैदान, बाग, पक्षी, मृग, भँवर, फल, फूल, सुगंधी शोभा, सब ऋतुओं की बहार गुप्त प्रकट कुन्ज, बिबिध प्रकार के ऋतु अनुकूल महल सभी जाति के सर्व सम्पति के योग्य बिस्तार बन है। इस प्रकार बन के बीच में सात आवरण महल चारों दिशा चार द्वारों के बीच बाग में कलप बृक्ष के नीचे मनोहर रास मन्डप है। अग्नी कोण बाग में झूलन कुन्ज नैऋत्य कोंण में मनोग कुन्ज, बायु कोंण में कलेऊ कुन्ज, इसान कोंण में शृंगार कुन्ज है। श्री युगल सरकार सरजू जी के किनारे से सखी समूहों के साथ फूल गेंद खेलते हुये अनेक कौतुक युत प्रमोदबन के फाटकों पर मंगल गीतादि दृष्यों को देखते हुये शृंगार कुन्ज में आये। समाज सहित शृंगार उतरा, रास शृंगार हुआ, कलेऊ किये। कल्प बृक्ष के नीचे रास मन्डपमें मंगल आरती, न्योछावर, जुहार, बन्दना युत रास कृत्य आरम्भ हुआ।

रास का प्रसंग इस प्रकार है—चैत से भादों तक श्रीकिशोरी जी के रुची पर गोप कन्या, देव कन्या, गन्धर्व कन्या, किन्नर कन्या, सिद्ध कन्या, साध्य कन्या, आदि युथेश्वरियों की प्रधानता में रास होता है असोज से फाल्गुन तक श्री रघुनाथजी के रुचि पर नागकन्या, पन्नगकन्या, राजकन्या, निमिवंशीकन्या, ब्रम्ह-कन्या, अज्ञातकन्या इन यूथेश्वरियों की प्रधानता में रास होता है। जिनकी प्रधानता हो उन्हीं के बिद्या, भाव, संगीत का क्रम, तथा रास रचना में सभी समाजों को श्री युगल सरकार के साथ सम्यक् प्रकार से सुख भोग प्राप्त होता है। रास के बीच २ में मान, व्याह, होली, बधाई आदि बिबिध प्रकार के उत्सव नाटक उत्पन्न होते हैं। राग भेद से, ऋतु भेद से, जाति भेद से सखियों में बिबिध प्रकार के सुख श्री युगल सरकार को प्राप्त होते हैं। रास का देश जल, थल, नभ, पर्वत आदि से सब जगह रास होता है रास में कोई भी लीला हो उसके उमंगशान्ती के लिये अंत में झूला अवश्य होता है। इस प्रकार ८ बजे से १२ बजे तक रास प्रसंग का वर्णन है। किन्तु उपासक को १० बजे तक में ही प्रमोद वन कल्प वृक्ष के दक्षिण तरफ बगीचा में बेदी के ऊपर सर्वगत बिमान में समाज सहित युगल सरकार को बैठ जाने की भावना करनी चाहिये। अन्यथा साधन अवस्था में निद्रा का समय कम पड़ने से तीन बजे प्रातः उठने में असमञ्जश होगा।

ग्यारू भोग।

श्री युगल सरकार का बिमान आकाश मार्ग से श्री कनक भवन शिशिर अनुरूप बन में बेदी के ऊपर बिमान से उतर कर

आवरण के गोल घर में रास का शृंगार उतार कर ब्यारू का शृंगार करके चरण प्रक्षालन, आरती हुई। इस गोल घर से भीतर की ओर भोजन कुन्ज से पूर्व फाटक की ओर से आकर भोजन कुन्ज में ब्यारू हुआ। पूड़ी, कचौड़ी, खाजा, खुरमा, घेवर, जलेबी, आदि षट्रस पदार्थ, दही, घृत, दूध आदिकों के पकवान समाज सहित दोनों सरकार दिन ही के भोजन की तरह रात्रि में ब्यारू करके आचमन कुल्ला किये। उठकर दक्षिण दरवाजे से तीन आवरण खम्भावली के किनारे पेंच गाड़ी में बैठ कर पान अतर पाके पेंच गाड़ी से भोजन कुन्ज के दक्षिण फाटक हो कर रंग महल से बाहर के पूर्व खम्भावली ओसारा में युगल सरकार समाज सहित बैठ गये। अपना स्वरूप समाज सहित श्री युगल सरकार की प्रसादी ब्यारू पाके उसी पेंच गाड़ी में युगल सरकार के नजदीक आके उतरे पान पाये।

शयन।

गान बजान, पान, देकर सखियों को विदा करके मुख्य सखियों के साथ प्रार्थना पूर्वक युगल सरकार शयन कुन्ज के अंदर सफेद आवरण लाल आवरण के आमने सामने अलग २ कुन्जों में शयन शृँगार करके फिर दोनों सरकार इकट्ठा होकर शयन कुन्ज के पलंग पर आ विराजे। दूध पिये, पान पाये। भोजन, वस्त्र, भूषण, रत्न, ये चार चीजों के ८ थाल भरे सखियों ने न्योछावर किये। आरती, जुहार पूर्वक फाटक बन्द कर तीनों

आवरण खम्भावलियों में परदा, पड़ गया। पूर्व तरफ के तीनों फाटकों को बन्द करवा दिये। और गाना, बजाना, हास, विलास युत श्री युगल सरकार पलंग पर सो गये। सखियों ने चरण दबाये। पश्चात् अपना सरूप ८ वर्ष की अवस्था में युगल सरकार के साथ ही एक छोटे से पलँग पर रात्रि सेवा के लिये रह करके दूसरे नित्य १२ वर्ष की अवस्था से सखियों के साथ शयन कुन्ज से चली। दक्षिण पाटक तीनों आवरण बाहर होते हुये पहरा वाली सखियों को साबधान करते हुये बाहर आई। पूर्व तरफ खम्भावली के किनारे पेंच गाड़ी में बैठ कर पूर्व द्वार तीसरे आवरण चौक से दक्षिण फाटक से स्वास्तिक भवन में श्री सर्वेश्वरी जी को कुन्ज में पलंग पर शयन कराके चरणा दबाये। आज्ञा पाके आचार्य्य को कुन्ज में शयन कराके चरण दबा के आज्ञा पाके अपना सरूप अपने कुन्ज के पलंग पर अपनी सखियों से सेवित हो सो गई। इच्छा मयी विमानों द्वारा सब सखियों के पास अनन्त रूप धारण करके प्रीतम भी पहुंच जाते हैं। इस प्रकार पूर्ण ब्रह्म परमात्मा भगवान श्री रामचन्द्र जी की आद्या शक्ति श्री सीता जी की कृपा से इस चेतन आत्मा की उस पूर्ण ब्रह्म परमात्मा का भोग मात्र में समान अधिकार प्राप्त होता है। श्री सीताराम जी की जै। श्री गुरुदेव जी की जै॥ श्री हनुमान जी की जै॥

॥ इति श्री अष्टयाम चरित्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री सीताराम जी के मुख्य अष्ट पार्षद

जै मिथिलाधिप नन्दनी जै अवधेश किशोर।
जैति चारुशीला अली सकल सखिन शिरमोर ॥ १ ॥
जै जै जै हनुमान श्री श्रीप्रसाद अवतार ।
चारुशिला सर्वेश्वरी तीनरूप निजधार ॥ २ ॥
जै श्री शुभगा भरत तन सेवा समय सुधार ।
महाविष्णु अवतार महि सनक सुशीला चार ॥ ३ ॥
जै बिमला अरु लक्ष्मणा लक्ष्मण रूपहु धार।
नारायण पुनि शेषतन सेवा समय बिचार ॥ ४ ॥
जै हेमा श्री रिपुदवन तीन रूप सुखसार ।
दम्पति सेवा सुरुख लखि भौमा सुक मुनि धार ॥ ५ ॥
सूर्य अंश सुग्रीव शिव शंकर्षण अवतार।
जै अतिशीला प्यारि पिय सुवरारोहा धार ॥ ६ ॥
जैति विभीषण भीषणा विश्वमोहनी शक्ति ।
पद्म सुगन्धा लाड़िली लाल प्रियावर शक्ति ॥ ७ ॥
भूशक्ती भूधरण की सुलोचना सिय प्यारि ।
जैति जृम्भणा हरिप्रिया जाम्ववान तनुधारि ॥ ८ ॥
जयति क्षमावति क्षेमदा क्षेमा क्षमावतार ।
अंगद विद्या वारिधर वागीशावर चार ॥ ९ ॥
वसु पारषद रसालहिय रसिकन आँख सुचार ।
लखै लखावत लाख लख अच्छ आँख अधिकार ॥ १० ॥

इति

श्रीसीताराम प्रेस
प्रमोदबन,
अयोध्या जी में मुद्रित।